RESEARCH PROPOSAL

बिहार में राजनीतिक नेतृत्व एवं समावेशी विकास: ई० नीतीश कुमार के शासनकाल का एक अध्ययन

FOR REGISTRATION TO THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY (PAT-2021-22)

Faculty of Social Science (Political Science)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY
Kameshwaranagar, Darbhanga-846004

Under the Supervision of

Supervisor

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U. Darbhanga-846008

Dr. Ghanshyam Roy
Associate Professor

Researcher

Sidharth Raj
PAT Roll No.: 22160217

शोध कार्य का शीर्षक (Title of Research Work):

बिहार में राजनीतिक नेतृत्व एवं समावेशी विकासः ई० नीतीश कुमार के शासनकाल का एक अध्ययन

परिचय (Introduction)

भारत के समृद्ध और वैभवशाली इतिहास में बिहार का महत्वपूर्ण स्थान है। सदियों से यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रमुख केंद्र रहा है। सक्षम साम्राज्यों के संरक्षण में बिहार हजारों वर्षों तक शिक्षा एंव संस्कृति का केंद्र रहा है। बिहार की भूमि हमेशा प्रयोगों और संभावनाओं की धरती रही है।

प्राचीनकाल से ही बिहार की धरती लोकतांत्रिक तथा रचनात्मक बदलावों की वाहक रही हैं। गौतम बुद्ध की ज्ञान भूमि, महात्मा गांधी तथा जय प्रकाश की कर्म भूमि और दसरथ मांझी की श्रमभूमि होने का गौरव इस पुण्य भूमि को प्राप्त हैं। यह हमेशा से क्रांतिकारियों की धरती रही हैं।

मानवीय संस्कृति एवं सभ्यता के आरंभिक काल से ही नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। बिहार में विकास की धारा को समझने के लिए राज्य की राजनीतिक प्रक्रिया और नेतृत्व का अध्ययन महत्वपूर्ण है। वास्तविकता यह है कि बिहार में राजनीतिक प्रक्रिया व बौद्धिक समझदारी राजनीतिक नेतृत्व के बिना अधूरी एवं कोरी–कल्पना हैं। राजनीतिक नेतृत्व वास्तव में आदर्श और यथार्थ के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। नेतृत्व, समाज तथा राज्यों के बीच एक कड़ी के रूप में काम करता हैं। हालांकि, नेतृत्व की उत्पति समाज से हुआ, परंतु समाज का संचालन नेतृत्व करती हैं।

लोकतंत्र का महत्वपूर्ण अंश है–नेतृत्व; विशेषतः लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में। उस समय जब राज्य राजनीति के अन्तर्गत नेतृत्व के महत्त्व पर जोर दिया गया था। यह अनुभव किया गया कि राज्य राजनीति के संदर्भ में ज्यादा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य ऐसे नेतृत्व का विकास करना है जो दूर–दराज इलाके के विकास के लिए उपर्युक्त हो।

नेतृत्व एक अन्योन्यक्रियात्मक दृष्टिगत वस्तु है जिसकी उत्पत्ति समूह निर्माण होने पर होती है। व्यक्तियों का समूह एकत्र होकर अपने आपको एक कार्य में लगा देता है जो कि सारे के सारे समूह को ही शामिल कर लेता है।

(Dr. Ghanshyam Ray)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

फिर समूह संरचना प्रकट होती है और एक व्यक्ति नेतृत्व की सौप दिया जाता है। इस प्रकार नेतृत्व सामाजिक अन्योन्याक्रिया का परिणाम है।

हेलनजेनिंग के अनुसार 'नेतृत्व का कारण किसी व्यक्तित्व के किसी एक लक्षण में निहित नहीं होता और न ही वह उससे संबंधित लक्षणों के समूह में विद्यमान होता है बल्कि उसके पास एक ऐसे अन्तवैक्तिक योगदान में होता है जिसके योग्य व्यक्ति एक ऐसी विशिष्ठ व्यवस्था में हो जाता है जिसके फलस्वरूप उसमें वह योगदान करने की भावना उत्पन्न होती है'।

नेतृत्व का एक महत्त्वपूर्ण कार्य जनमत का निर्माण करना होता है। जनमत–निर्माण में नेताओं का महत्त्वपूर्ण हाथ रहता है। वे किसी समस्या की व्यवस्था करते हैं। लोगों में कुछ कुंठाएँ या कुछ उत्कंठाएँ हो सकती है। यह केवल नेता ही है जो इन धुंधली किन्तु सुदृढ़ भावनाओं को मुखरित करता है और क्रिस्टल की तरह निश्चित करता है। जब जनमत का निर्माण किया जाता है तो केवल नेतृत्व अपने आप में सबकुछ नहीं होता। नेतृत्व का महत्त्व केवल तभी होता है जब लोगों में कुछ उत्कंठाएँ हो। नेता ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं कर सकता; जब ऐसी स्थिति मौजूद हो तो वह केवल उसे परिश्कृत कर सकता है।

वाट्लैट ने नेताओं को तीन समूह में वर्गीकरण किया है:–

1. संस्थागत नेता 2. प्रभावी नेता 3. प्रत्यायक नेता ।

संस्थागत नेता, समूह का मुखिया, एक नियुक्त व्यक्ति अथवा कार्यकारी सत्ता होता है। किसी संगठन का प्रधान होने के नाते उसकी स्थिति से प्रतिष्ठा जुड़ी रहती है, जो उसे अपने कर्मचारियों तथा समूह के सदस्यों पर सत्ता जमाए रखने में समर्थ बनाती है। इस प्रकार का नेता वंशानुगत नेता भी हो सकता है। पटेल, जिला अधिकारी, देश का राष्ट्रपति, कम्पनी अध्यक्ष या कार्यालयध्यक्ष या कारखाना अध्यक्ष ये सबके सब संस्थागत नेता होते हैं ।

प्रभावी नेताओं को अत्यधिक आक्रमक, निश्चियात्मक तथा बर्हिमुखी के रूप में चित्रण किया जा सकता है। उसका प्राथमिक उद्देश्य समूह की समस्याओं को सम्मान के साथ सुलझाना होता है। उन्हें समस्याओं को विस्तार में अथवा

Dr. Ghanshyam Rai
Associate Professor
University Department of Political Science
L.N.M.U., Darbhanga 846008

ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में उनका निरीक्षण करने का धैर्य नहीं होता है। वे ऐसे निर्णय लेने में शीघ्रगामी होते हैं, जिनका उद्देश्य वर्तमान अवस्थाओं को बदलना होता है।

सभी प्रकार के नेताओं में प्रत्यायक नेता ही ऐसी होता है जो अनुयायियों के साथ अधिक से अधिक सम्पर्क में रहता है। वह लोगों के साथ हिल मिल जाता है; उनकी समस्याओं को समझता है और उसकी अवश्यकताओं तथा भावनाओं की अनुभूति रखता है।

तत्मन ने नेतृत्व के गुणों का प्रारम्भिक अध्ययन किया था। उसने पाया कि 'नेता कम स्वार्थी, अधिक साहसी, कम भावुक, खूबसूरत और अपने अनुगामियों के अपेक्षा विशालकाय होता है'।

आटेगा० वाई० गैसेट ने अपने अभिजन सिद्धांत में यह प्रतिपादित करने का प्रयास (चेष्टा) किया है कि 'कोई भी राष्ट्र महान तब होगा जब उसकी जनता जन–सामान्य, जनसमूह, सर्व साधारण कुछ चुने हुए लोगों को अपना प्रतीक मान लेते हैं और उन्हें अपने शक्तिशाली उत्साह का समस्त कोष उनके समर्थन में जुटा देने के लिए तैयार हो जाते हैं। ये चुने हुए व्यक्ति वे हैं जो समाज में प्रमुख स्थान रखते हैं तथा जन कल्याण का नेतृत्व करने की क्षमता रखते हैं'।

वह विकास जो गरीबी को कम करने में मदद करता है और रोज़गार के अवसर पैदा करता है, को समावेशी विकास कहते हैं। इसमें अवसरों की समानता प्रदान करना, लोगों को शिक्षा व कौशल के लिए सशक्त करना, अर्थात् अवसरों की समानता के साथ विकास को बढ़ावा देना शामिल है।

दूसरे शब्दों में, ऐसा विकास जो न केवल नए आर्थिक अवसर पैदा करे, बल्कि ऐसे अवसरों को समाज के सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपलब्ध कराए।

वस्तुनिष्ट दृष्टि से समावेशी विकास उस स्थिति को दर्शाता है जब प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की उच्च संवृद्धि दर के साथ आय और धन के वितरण में असमानता होती है।

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

11वीं पंचवर्षीय योजना ने समाज के सभी वर्गों के लोगों की जीवन की गुणवत्ता को सुधारने और उन्हें अवसरों की समानता देने का लक्ष्य रखा था. यह पहली बार था कि समावेशी विकास की अवधारणा सामने आई।

12वीं पंचवर्षीय योजना (वर्ष 2012 से 2017) का विषय था "तीव्र, समावेशी एवं सतत् विकास"। योजना में निर्धारित 8 प्रतिशत की विकास दर को हासिल करने के लिए, सरकार ने समावेशी विकास की स्थिति प्राप्त करने के लिये कई योजनाओं की शुरुआत की, जिनमें दीनदयाल अंत्योदय योजना, समेकित बाल विकास कार्यक्रम, मिड–डे मील, मनरेगा, सर्वोदय विद्यालय योजना और दीनदयाल अंत्योदय योजना शामिल हैं।

अवसर, क्षमता, पहुंच और सुरक्षा समावेश की चार विशेषताएं हैं। अवसर विशेषता लोगों को अधिक अवसर पैदा करने और अधिक आय कमाने पर केंद्रित है। उपलब्ध अवसरों का फायदा उठाने के लिए लोगों को अपनी क्षमताओं को एकजुट करने के लिए उपकरण देने पर केंद्रित हैं। रक्षा विशिष्टता लोगों को आजीविका को स्थायी या अस्थायी नुकसान से बचाने का मौका देती है। इसलिए कहा जा सकता है कि साथ–साथ समावेशी विकास आर्थिक विकास का निरंतर विस्तार है।

शोध समस्या का प्राक्कथन (Statement of the Research Problem):

बिहार की राजनीति में नेतृत्व विभिन्न प्रकार का पाया जाता है क्योंकि सभी नेता न तो एक प्रकार के होते हैं और न ही उन्हें समस्त वर्गों का एक समान विश्वास प्राप्त होता है, और न ही वे सभी प्रकार की आवश्यताओं की पूर्ति करते हैं। कुशल राजनीतिक नेतृत्व जहां एक और प्रशासन में पारदर्शिता लाता है वहीं दूसरी ओर उसमें उत्तरदायित्व की भावना का भी संचार करता है। राजनीतिक नेतृत्व में विभिन्न वर्गों की बढ़ती सहभागिता ने स्थानीय स्तर पर विकास संबंधित नीतियों के निर्धारण एवं उसकी क्रियान्वयन को गति प्रदान किया हैं। चुनाव में लोगो की बढ़ती सहभागिता से नए नेतृत्व का उभरना निश्चित हैं। राज्य राजनीति की सफलता राज्य स्तर पर उपलब्ध नेतृत्व में विद्यमान उन गुणों पर निर्भर करती है, जो इन संस्थानों के कार्यों के

(Dr.) Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

सुगमतापूर्वक संचालन में सहायक हो। इसलिए आवश्यकता है कि बिहार में राजनीतिक नेतृत्व का अध्ययन किया जाय

- बिहार की राजनीति में नेतृत्व की भूमिका क्या हैं? नेतृत्व किस प्रकार का है एवं किस दिशा में उनका विकास हो रहा हैं?
- बिहार के समावेशी विकास में नेतृत्व की भूमिका क्या है ?
- बिहार के राजनीतिक नेतृत्व ने बिहार के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों का कितना समाधान किया ?
- बिहार के राजनीति का राष्ट्रीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा ?
- बिहार के सर्वांगीण एवं समावेशी विकास में नीतीश कुमार का क्या योगदान रहा?

शोध का आच्छादनः सारतत्व एवं क्षेत्र (Coverage of Research Area):

- यह शोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र बिहार हैं, इसके अन्तर्गत 2005 से 2023 तक की अवधि का अध्ययन व विश्लेषण किया जाएगा।
- यह शोध कार्य के अंतर्गत बिहार की राजनीति पर राजनीतिक नेतृत्व के प्रभाव का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा।
- इस शोध में बिहार के राजनीति में नीतीश कुमार के नेतृत्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।
- इस शोध अध्ययन में समावेशी विकास नीतियों एवं कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया जाएगा।
- इस शोध कार्य में बिहार के राजनीतिक नेतृत्व का भारत के राजनीति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

साहित्य का पुर्नविलोकन (Review of Literature):

➢ अरुण सिन्हा ने अपनी पुस्तक ***'नीतीश कुमार और उभरता बिहार'*** (2013) में विपरीत परिस्थितियों में बिहार का शासन सँभालने वाले

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

नीतीश बाबू की उस कर्मठ एवं जुझारू कार्यशैली का बेबाक वर्णन किया है, जिसने बिहार को एक नई दिशा दी, एक नई पहचान दी। उन्होंने बिहार के सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में नीतीश कुमार के उदय की कहानी बताई है और 1960 के दशक के आखिर से शुरू हुए समतावादी आंदोलनों तथा इनके फलस्वरूप 1990 में हुए सत्ता–परिवर्तन का विस्तार से वर्णन किया है। इसमे बिहार की राजनीति का स्पष्ट और गहन अध्ययन है। अरुण सिन्हा ने बिहार की राजनीति की जटिलता के बीच नीतीश कुमार के उदय और कानून–व्यवस्था, सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार करने को विस्तार से समझाया है। सामंतवाद से जातीय अस्मिता और अंततः विकास के पथ पर आकर बिहार ने भारत की स्वतंत्रता के बाद की यात्रा में स्वयं को आदर्श साबित किया है। बिहार की राजनीति एवं हो रहे ताजा विकास पर प्रकाश डाला।

- प्रोफेसर कामेश्वर झा ने अपनी पुस्तक '***नित नूतन बिहारः उन्नायक नीतीश कुमार***' (2020) में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को एक कर्मयोगी बताया गया है। पुस्तक में कहा गया है कि नीतीश कुमार का जीवन दर्शन पारदर्शिता, ईमानदारी, सर्वधर्म समभाव, सामाजिक समरसता, सुशासन, निर्भीकता और अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाना है। वर्तमान राजनीति के गिरते माहौल में भी इन्होंने सबसे अलग अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाई है।
- नरेंद्र पाठक ने अपनी पुस्तक '***विकसित बिहार की खोज – नीतीश कुमार***' (2012) में नीतीश कुमार के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कार्यो का विवेचना की हैं। एक राजनेता के रूप में वे अपनी वाणी से कुछ न कहकर अपना उत्तर रचनात्मक कार्यों के रूप में देते हैं। उनकी मान्यता है कि सुशासन का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। राजनीति में सूचित और पारदर्शिता का प्रमाण देने वाले इन लेखों से आम आदमी का राजनीतिज्ञों में और विकास के कामों में विश्वास बढ़ेगा।

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

- ललित कुमार सिंह ने अपनी पुस्तक '***डॉ० कलाम के सपनो का बिहार*** (2017) में भारत के प्राचीन एवं गौरवशाली इतिहास तथा सांस्कृतिक विकास में बिहार राज्य की भूमिका को दर्शाया हैं। इस पुस्तक में डॉ० कलाम ने बिहार को विकसित राज्य बनाने के लिए सिर्फ वैज्ञानिक सोच नही बल्कि सामाजिक परिवर्तन की भी रूपरेखा निर्धारित की हैं। यह पुस्तक डॉ० कलाम के विभिन्न बिहार यात्राओं के दौरान दिए गए संदेशों का एक संकलन हैं।

- राज्यसभा सदस्य, रामनाथ ठाकुर ने अपने आलेख '***समावेशी विकास के पर्यायः नीतीश कुमार*** (2023), (प्रयोगधर्मी विकास शिल्पी नीतीश कुमार, संपादकः कुमार वरुण) में नीतीश कुमार को समावेशी विकास पुरुष की संज्ञा दिया। कुशल नेतृत्व के द्वारा उनकी दूरदर्शी और रचनात्मक सोच ने बिहार के समावेशी विकास में सहायता प्रदान की। उनके द्वारा किए गए कार्यों का राष्ट्रीय पटल पर हो रही सराहना का विस्तृत वर्णन किया है।

- प्रो० मिथिलेश कुमार सिन्हा ने अपने आलेख '***नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार का विकास***' (2023) (प्रयोगधर्मी विकास – शिल्पी नीतीश कुमार, संपादकः कुमार वरुण) में उन्होंने विभिन्न एजेंसियों के द्वारा जारी विकास सूचकांक के विभिन्न आयाम के आंकड़ा के द्वारा लालू – राबड़ी शासनकाल तथा नीतीश कुमार के शासनकाल का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। साथ ही 15 वर्षों तक भारत की आर्थिक व्यवस्था से बहुत पिछड़े हुए राज्य को भारतीय अर्थव्यवस्था से कदम से कदम मिलाकर चलने में नीतीश कुमार के योगदान का चर्चा किया गया है।

- बिहार सरकार के पूर्व जल संसाधन एवं सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री, संजय कुमार झा ने अपने आलेख '***नए बिहार के निर्माताः नीतीश कुमार*** (2023), (प्रयोगधर्मी विकास – शिल्पी नीतीश कुमार, संपादकः कुमार वरुण) में उन्होंने बिहार के विकास में नीतीश

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

कुमार के नेतृत्व में लिए गए ऐतिहासिक फैसलों तथा चलाएं जा रहे अनेक नीतियों एवं कार्यक्रमों का वर्णन किया है। कैसे नीतीश कुमार के ऐतिहासिक एवं दूरदर्शितापूर्ण फैसले, नीतियां और कार्यक्रमों ने बिहार को पिछड़ेपन से निकालकर तेजी से विकसित होता प्रदेश बनाया का विस्तृत विवरण किया है।

➢ बिहार विधान परिषद सदस्य, डॉ० आफाक अहमद खान ने अपने आलेख '***सर्वांगीण एवं समावेशी विकास के प्रणेताः नीतीश कुमार***' (2023) (प्रयोगधर्मी विकास शिल्पी नीतीश कुमार, संपादकः कुमार वरुण) में नीतीश कुमार के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन के बारे मे बताया। 2005 में नीतीश सरकार के गठन के समय उनके समक्ष अनेक चुनौतियों तथा उसका सफलतापूर्वक निपटारा कर कैसे नीतीश कुमार ने अपने आप को कुशल नेतृत्वकर्ता साबित किया का चर्चा किया है। साथ ही नीतीश सरकार के द्वारा बिहार के सर्वांगीण एवं समावेशी विकास को लेकर चलाए जा रहे योजनाओं तथा नीतियों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

शोध कार्य का उद्देश्य (Objectives of the Research):

बिहार की राजनीति परिर्वतन के दौर से गुजर रहा हैं। राजनीतिक समझ रखने वाले लोगो के लिए भी बिहार एक कठिन प्रदेश के रूप में जाना जाता रहा हैं। राजनीतिक विश्लेषक का भी मानना है कि बिहार की राजनीति को समझना आसान नही है क्योंकि यहां की राजनीति बहुत जटिल है। इसके साथ ही बिहार में जो राजनीति प्रयोग होता हैं; उसे राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखने अथवा समझने की कोशिश की जाती हैं।

- प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य बिहार के राजनीतिक नेतृत्व के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का अध्ययन करना।

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L.N.M.U., Darbhanga-846008

- प्रस्तुत शोध प्रबंध में बिहार सरकार के समावेशी विकास की नीतियों का अध्ययन किया जाएगा।
- प्रस्तुत शोध में बिहार के राजनीतिक नेतृत्व का भारत की राजनीति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।
- इस शोध के द्वारा बिहार की राजनीति में नीतीश कुमार के नेतृत्व के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

शोध परिकल्पना (Research Hypotheses):

प्रस्तुत शोध कार्य को सुगमतापूर्वक संपादित करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है, जिसका सत्यापन किया जाना है।

- बिहार के समावेशी विकास में राजनीतिक नेतृत्व की प्रभावशाली भूमिका रही हैं;
- बिहार की राजनीति में नेतृत्व की केंद्रीय भूमिका है;
- बिहार में राजनीतिक नेतृत्व ने व्यक्ति केन्द्रित राजनीति को बढ़ावा दिया हैं;
- बिहार में राजनीतिक नेतृत्व ने उभरते मुद्दे के समाधान का प्रयास किया।

प्रस्तुत शोध का विषय एवं संबद्ध विषय के लिए योगदान (Contribution of Research work to the Discipline and Allied Discipline:

- प्रस्तुत शोध कार्य बिहार में नेतृत्व के समक्ष चुनौतियों से निपटारे में कारगर सिद्ध होगा।
- प्रस्तुत शोध के माध्यम से बिहार के समावेशी विकास को गति मिलेगी।
- प्रस्तुत शोध कार्य से समस्याओं से निपटने में सरकार तथा स्थानीय प्रशासन को मदद मिलेगा।
- प्रस्तुत शोध प्रबंध का उपयोग राजनीतिक समाजशास्त्र के अध्ययन में सहायक होगा।

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

शोध अध्ययन पद्धति (Resesrch Methodology):

इस प्रस्तावित शोध अनुसंधान में ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक पद्धति के प्रयोग से घटनाओं के समग्र एंव वास्तविक रूप से जानने का प्रयास किया जाएगा एवं आवश्यकता अनुसार सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

इस शोध के अंतर्गत आंकड़ों के संग्रह में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा।

इस शोध के अंतर्गत प्राथमिक स्रोत के रूप में सरकारी आंकडो, अभिलेखों, घोषणाओं, संसद एवं विधानमंडल में बहस, संस्मरण, आत्मकथाएं, संबंध व्यक्तियों के पत्राचार, राजनीतिक दलों की घोषणा पत्र, आदि से तथ्य संकलित किए जाएंगे।

इस शोध के अंतर्गत द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रकाशित पुस्तको, शोध–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, संसदीय पत्रिका, विभिन्न प्रतिष्ठित बेबसाइटो, ई–पुस्तकालय इत्यादि का उपयोग किया जाएगा। इस विषय पर केंद्रीय पुस्तकालय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, आदि में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध अनुसंधान का अध्यायीकरण का स्वरूप निम्नलिखित है जिसमें आवश्यकतानुसार संशोधन किया जा सकता है:

प्रथम :– परिचय

द्वितीय :– नेतृत्व का सैद्धांतिक आयाम

तृतीय :– बिहार की राजनीतिक पृष्टभूमि व राजनीतिक प्रक्रिया

चतुर्थ :– बिहार में समावेशी विकास और राजनीतिक नेतृत्व

पंचम :– मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नीतियों एवं कार्यक्रमों का विश्लेषण

षष्टम :– निष्कर्ष

ग्रन्थ सूची

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

ग्रन्थ सूची (Bibliography):

- कुमार, वरुण (2023), ' *प्रयोगधर्मी विकास – शिल्पी नीतीश कुमार* ', नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, दरियागंज
- झा, प्रो० कामेश्वर (2020), '*नित नूतन बिहारः उन्नायक नीतीश कुमार* ', समीक्षा प्रकाशक, मुजफ्फरपुर
- सिन्हा, अरुण (2020), *बैटल फॉर बिहार,* पेंगुइन रैंडम हाउस
- कुमार, इंद्रसेन (2019), *बिहार अनटोल्ड ग्रोथ स्टोरी* , नई दिल्ली :एने बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
- झा, प्रो० कामेश्वर (2019), *बिहार का उत्कर्ष,* राष्ट्रीय प्रकाशन संस्थान, पटना
- सिंह, ललित कुमार (2018), *डॉक्टर कलाम के सपनों का बिहार,* नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान
- कुमार, नीतीश (2016), ' *विकसित बिहार की खोज* ', प्रभात प्रकाशन
- ठाकुर, संकर्षण (2015), '*अकेला आदमी (कहानी नीतीश कुमार की),* प्रभात प्रकाशन
- सिन्हा, अरुण (2013) '*नीतीश कुमार और उभरता बिहार*', प्रभात प्रकाशन प्रा० लि०
- कुमार, दिनेश, दिनेश गुप्ता (2013), ' *सुरंग के पार बिहार* ', प्रभात प्रकाशन
- मिश्र, डॉ जगन्नाथ (2012) '*बिहार विकास और संघर्ष',* पटनाः नोवेल्टी एंड कंपनी
- कुमार, पंकज (2012) '*विकास का नायकः नीतीश कुमार*' डायमंड बुक प्रकाशन
- वर्मा, डॉ० रविन्द्र कुमार (2012), ' *राजनीतिक नेतृत्व* ', पटनाः बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी

पर्यवेक्षक

डॉ० घनश्याम राय
सह – प्राध्यापक
वि. वि. राजनीति विज्ञान विभाग
ल. ना. मि. वि., दरभंगा

(Dr. Ghanshyam Roy)
Associate Professor
University Department of Political Science
L. N. M. U., Darbhanga-846008

शोधार्थी

सिद्धार्थ राज
वि. वि. राजनीति विज्ञान विभाग
PAT Roll No.: 22160217